INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 8.428 (SJIF 2026)

भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका संबंधों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

(An Analytical Study of India - US Relation)

कीर्ती चौहान
शोधार्थिनी
आगरा कॉलेज, आगरा.
डॉ. भीमराव आंबेडकर यूनिवर्सिटी,
आगरा (उत्तर प्रदेश, भारत)

प्रो. डॉ. मृणाल शर्मा
विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान,
आगरा कॉलेज, आगरा.
डॉ. भीमराव आंबेडकर यूनिवर्सिटी,
आगरा (उत्तर प्रदेश, भारत)

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/07.2026-73931794/IRJHIS2607014

शोध का सारांश :

यह शोध पत्र भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका के द्विपक्षीय संबंधों का एक गहन विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। इस पत्र में ऐतिहासिक रूप से भारत अमेरिका के मध्य शीत युद्ध के दौरान से वैचारिक भिन्नताओं और गुटनिरपेक्षता के नीति के कारण विश्वास और अलगाव देखने को जो मिला उसकी सुव्यवस्थित रूप से व्याख्या करता है। वर्ष 1991 के आर्थिक सुधार और 2005 के 123 समझौते ने दोनों देशों के मध्य कैसे संबंधों को नई दिशा प्रदान की और वर्तमान में यह साझेदारी व्यापक वैश्विक रणनीतिक साझेदारी में बदल चुकी है। समकालीन भू राजनीतिक चुनौतियों के संदर्भ में दोनों देशों के संबंधों का एक गहन विश्लेषण प्रस्तुत करना है। इस शोध पत्र को तीन भागों में विभाजित किया गया है । इसकी शुरुआत पहले अध्याय शीत युद्ध के दौरान अमेरिका भारत संबंधों के इतिहास से होती है। जिसमें दर्शाया गया है कि यह संबंध भिन्न–भिन्न आकलन और कभी–कभी परस्पर विरोधी भू राजनीतिक प्राथमिकताओं से प्रभावित थे जो की संरचनात्मक मतभेद था ना की शत्रुतापूर्ण विरोधी या परस्पर विरोधी इस शोध पत्र का दूसरा भाग शीत युद्ध की समाप्ति के पश्चात आए बदलाव का विश्लेषण करता है। और अंतिम भाग समकालीन भू राजनीतिक में दोनों देशों के मध्य सहयोग और चुनौतियों की व्याख्या करता है ।अतः यह शोध दोनों देशों की साझेदारी केवल विपक्षीय न होकर वैश्विक बहुध्रुवीय व्यवस्था को कैसे आकार देने में एक सहायक भूमिका निभा रही है उसका विश्लेषण करता है।

मुख्य शब्द : *रणनीतिक स्वायत्तता, भू राजनीतिक, शीत युद्ध, 123 समझौता, आतंकवाद, क्वॉड।*

प्रस्तावना :

भारत और अमेरिका विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश हैं। जिनमें काफी समानताएं हैं जैसे दोनों देशों ने औपनिवेशिक सरकार के खिलाफ संघर्ष कर स्वतंत्रता प्राप्त कर लोकतांत्रिक शासन प्रणाली को अपनाया परंतु आर्थिक और वैश्विक संबंधों के क्षेत्र में दोनों देशों के मध्य भिन्न–भिन्न दृष्टिकोण के कारण आपसी संबंधों में

काफी असमानताएं भी देखने को मिली । नेहरू युग में भारत अमेरिका के मध्य अनेक क्षेत्रों में सहमति होते हुए भी कुछ क्षेत्रों में पर्याप्त सहयोग था। अमेरिका ने भारत के प्रति शुरुआत से ही दोहरी नीति अपनाई जहां उसका उद्देश्य सिर्फ भारत को अपने खेमे में शामिल करना था ।जब विश्व दो गुटों में विभाजित था जिसका एक नेतृत्व अमेरिका और दूसरे गुट का नेतृत्व सेवियत सघं का था । वहीं भारत ने अपने बुनियादी सिद्धांतों के आधार पर गुटनिरपेक्षता नीति का अनुसरण कर दोनों गुटों में शामिल होने से मना कर दिया और एक बार पुनः स्वतंत्र नीति के अनुसरण पर बल दिया। जिससे भारत अमेरिका के मध्य संबंधों में कटता आई धीरे–धीरे दोनों देशों के मध्य आपसी संबंधों में सुधार भी हुआ जहां शीत युद्ध के विश्वास के दौर से निकलकर एक ऐसी परिपक्क मोड पर पहुंचकर भारत अमेरिका ने आपसी मतभेदों को प्रबधित करते हुए साझा हितों पर मिलकर कार्य प्रारंभ किया ।यह साझेदारी वैश्विक व्यवस्था समुद्री सुरक्षा और तकनीकी नवाचार के भविष्य को तय करने के लिए आवश्यक थी समकालीन परिदृश्य में दोनों का एक साथ आना सबसे बड़ी आवश्यकता और वास्तविकता है।

विश्लेषण :

शीत युद्ध के दौरान :

यह दौर सन 1947 से 1991 तक चला। जब विश्व की दो महाशक्तियों अमेरिका और सेंवियतं संघ औपचारिक रूप से युद्ध में सलंगत न होकर ` एक दूसरे के विचार के साथ बम विस्फोट किया करते थे । इसी दौर में भारत अमेरिका के संबंध भी जटिल थे । भारत ने गुटनिरपेक्ष आंदोलन का नेतृत्व कर दोनों महा शक्तियों से दूरी बनाइ, जहां अमेरिका ने पाकिस्तान के साथ गठबंधन कर उसे काफी सहायता प्रदान की । जिससे भारत में हिंसक गतिविधियां भी हुई । जहां अमेरिका ने सिर्फ पाकिस्तान का साथ दिया जो दोनों देश भारत अमेरिका संबंधों में तनाव रहा । 1971 के भारत पाकिस्तान युद्ध के दौरान जब अमेरिका ने पाकिस्तान का समर्थन किया । जिससे दोनों के मध्य और तनाव पैदा हुआ जब सोवियत संघ के साथ अपने संबंध स्थापित किया । जिसके परिणाम स्वरुप भारत सोवियत संघ के मध्य 20 वर्षीय एक संधि पर हस्ताक्षर हुए जिसके परिणाम स्वरुप अमेरिका का रुख भारत के प्रति और कठोर हो गया । भारत अमेरिका के संबंधों में इस शीत युद्ध के दौरान काफी उतार–चढ़ाव देखने को मिला । इंदिरा गांधी युग में अमेरिका के राष्ट्रपति जॉनसन ने इंदिरा को अमेरिका के यात्रा के लिए जब अनुरोध किया । तब यह आशा की जाती थी । कि यह यात्रा के पश्चात भारत अमेरिका के मध्य सहयोग का एक नया अध्याय शुरू होगा , किंतु अमेरिका की दबाव नीति के कारण कोई अनुकूल परिणाम नहीं निकला ।

शीत युद्ध पश्चात :

शीत युद्ध की समाप्ति के बाद वैश्विक शक्ति संतुलन में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए जहां सेवियत संघ के विघटन ने एक धुवीय विश्व व्यवस्था की स्थापना की जिसमें अमेरिका एकमात्र महाशक्ति के रूप में उभरा। इस परिवर्तन ने भारत अमेरिका के मध्य नए अवसर और साझेदारियों का मार्ग प्रशस्त किया। भारत ने अपनी आर्थिक नीतियों में सुधार करते हुए 1991 में प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव द्वारा शुरू किए गए । आर्थिक उदारीकरण ने भारत अमेरिका के मध्य आर्थिक और व्यापारिक संबंधों को एक नया आयाम प्रदान किया । वहीं चीन की बढ़ती आर्थिक सैन्य शक्ति ने क्षेत्रीय और वैश्विक राजनीति में नए समीकरण बनाए भारत अमेरिका ने चीन बढ़ती शक्तियों को

एक रणनीतिक चुनौतियों के रूप में देखा जहां भारत अमेरिका के मध्य रणनीतिक साझेदारी और मजबूत देखने को मिली और भारत और अमेरिका की इस बढ़ती साझेदारी और चीन की प्रतिक्रिया ने एशिया में एक नए भू राजनीतिक संतुलन की आवश्यकता को जन्म दिया। 1998 में भारत के परमाणु परीक्षण के बाद दोनों देशों के मध्य तनाव बड़ा राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने भारत पर कठोर आर्थिक प्रतिबंध लगाए जिससे दोनों देशों के मध्य संबंधों में कटुता देखने को मिली इसके पश्चात शुरू हुए जसवंत सिंह और स्ट्रोब टालबाट संवाद ने भारत अमेरिका के मध्य बातचीत के नए द्वार खोले । विल क्लिंटन की पांच दिवसीय यात्रा दोनों देशों के संबंधों का एक और नया मोड़ साबित हुए इस दौर के दौरान दोनों देशों में कई क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने हेतु समझौते भी हस्ताक्षरित किए गए । 2005 में अमेरिका राष्ट्रपति जोड़ डब्लू बुश और भारतीय प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने अमेरिका भारत परमाणु समझौता किया जो दोनों देशों के मध्य एक मील का पत्थर साबित हुआ । जिसके परिणाम स्वरुप भारत को अंतरराष्ट्रीय परमाणु व्यापार में शामिल होने की अनुमति दी और उसकी ऊर्जा सुरक्षा को बढ़ावा भी मिला ।शीत युद्ध पश्चात दोनों देशों के संबंधों में महत्वपूर्ण बदलाव और विकास के मार्ग प्रस हुए वर्ष 2006 में राष्ट्रपति भारत अमेरिका संबंधों को नए आयाम देने हेतु भारत की तीन दिवसीय यात्रा की जिस दौरान भारत को परमाणु सहयोग समझौता किया। जिससे दोनों देशों के संबंधों में एक नया मोड़ आया । जब 2008 में सीनियर बुश ने भारत अमेरिका सैनिक नाभिकीय करार पर हस्ताक्षर कर कानून बना दिया । वर्ष 2009 में बराक ओबामा ने भारत को परमाणु शक्ति के रूप में स्वीकार किया और दोनों देशों के मध्य साझेदारी चरण की शुरुआत हुई ।और इसे वैश्विक राजनीति की एक नई साझेदारी बताया गया वर्तमान संदर्भ में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दोनों देशों के मध्य संबंधों को प्रगाड बनाने हेतु अपने कार्यकाल के आरंभ में ही अमेरिका का दौरा किया जहां उन्होंने अहम समझौते पर हस्ताक्षर किए जनवरी 2015 में अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा की तीन दिवसीय भारत यात्रा कई माइनो में मील का पत्थर साबित हुई।

भारत अमेरिका के मित्रता के नए अध्याय के रूप में सितंबर 2019 को भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अमेरिका यात्रा जिसमें हाउ दी मोदी एनआरजी स्टेडियम में आयोजित हुए थे मोदी काल मे कार्यक्रम में एक अमेरिकी भारतीय समुदाय को संबोधित करना और फरवरी 2020 की अमेरिकन राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की भारत यात्रा में अहमदाबाद के मोटेरा में आयोजित नमस्ते ट्रंप कार्यक्रम अत्यंत महत्वपूर्ण है जो भारत और अमेरिका के संबंधों के अच्छे पल उजागर करता हैं ।और जब जो बिडेन अमेरिका के राष्ट्रपति बने तो उनके कायकाल में भी दोनों देशों के इिपक्षीय संबंधों में गति आइ । भारत में आयोजित वर्ष 2023 का जी–20 शिखर सम्मेलन भारत का महाशक्ति के रूप में वैश्विक नेतृत्व क्षमता को प्रदर्शित करने का एक ऐतिहासिक अवसर बना और भारत अमेरिका का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार बनकर उभरा वर्ष 2023 में भारत अमेरिका के मध्य कुल व्यापार 191 बिलियन डॉलर के स्तर के पार कर गया अभी हाल में ही दोनों देशों ने एक व्यापार व निवेश के क्षेत्र में मिशन 500 लक्षण आधारित किया है । जिसका मुख्य उद्देश्य 2030 तक इिपक्षीय व्यापार को 500 अरब डालर तक पहुंचना है । दोनों देशों के मध्य रक्षा व राजनीतिक संबंध अधिक सशक्त होकर उभर रहे हैं। तथा दोनों वैश्विक घटना आतंकवाद जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दों पर अपने सहयोग पूर्ण नीतियों का संचालन भी कर रहे है।

भारत अमेरिका के मध्य सहयोग वैश्विक शक्ति संतुलन बनाए रखने और बहु विश्व की नींव रखने पर केंद्रित है ।

जिसमें **हिंद प्रशांत क्षेत्र** यह क्षेत्र भू राजनीतिक का केंद्र बन चुका है जो कि चीन की बेल्ट रोड इनीशिएटिव और दक्षिण सागर में उसकी आक्रामकता को संतुलित करने हेतु दोनों देश एकजुट हुए हैं ।

क्वॉड :

चार देशो का एक समूह है जिसमें भारत अमेरिका जापान और ऑस्ट्रेलिया शामिल है ।यह समूह एक मुफ्त खुले और समावेशी हिंद प्रशांत की वकालत करता है। दोनों देश बहुधुवीय एशिया के समर्थक हैं ना कि किसी एक देश के वर्चस्व वाले देश के एशिया के यह समूह चीन के अकर्मकता को रोकने के लिए हिंद प्रशांत क्षेत्र में **अग्रणी भूमिका निभा रहे है ।**

तकनीकी सहयोग :

जनवरी 2023 में शुरू की गई आईसीटी जो दोनों देशों के मध्य सहयोग का एक नया अध्याय है । जिसके तहत भारत अमेरिका आई क्वांटम कंप्यूटिंग सेमीकंडक्टर सप्लाई चौन अंतरिक्ष और 6जी तकनीक पर मिलकर कार्य कर रहे हैं ।जिसका मुख्य उद्देश्य संवेदनशील तकनीक के मामले में चीन पर वैश्विक निर्भरता को कम करना है। दोनों देशों ने सैन्य तालमेल और अंतर संचालन नियत को बढ़ाने के लिए चार महत्वपूर्ण समझौते पर हस्ताक्षर किए जो भारत अमेरिका के संबंधों में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं ।

सैन्य सूचना समझौते की सामान्य सुरक्षा वर्ष 2002 यह समझौता दोनों देशों के मध्य सैनिक खुफिया जानकारी साझा करने हेतु मददगार होगा ।

भारत अमेरिका परमाणु समझौता वर्ष 2008 :

लॉजिस्टिक एक्सचेंज मेमोरेंडम का एग्रीमेंट 2016 यह समझौता दोनों देशों की सेनो को एक दूसरे के सैन्य ठिकानों से रसद और ईंधन लेने की अनुमति प्रदान करता है।

भारत अमेरिका सामरिक ऊर्जा भागीदारी वर्ष 2017 :

संचार सं संगतता तथा और सुरक्षा समझौता 2018 में हुआ यह समझौते के माध्यम से दोनों देश सुरक्षित संचार और अत्यधिक सैन्य तकनीक हस्तांतरण के लिए महत्वपूर्ण उपलब्धि प्रदान करता है।

आतंकवाद विरोध पर द संयुक्त कार्य दल की बैठक 2019 :

वही **बेका 2020** समझौता दोनों देशों के मध्य सटीक भू स्थानिक डाटा और सैटलाइट इमेजरी साझा करने हेतु किया गया है ।

साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में सहयोग पर समझौता :

इन सभी समझोतो से दोनों देशों को बड़ा फायदा हुआ और सबसे बड़ा फायदा यह है ,कि भारत अमेरिका के संबंध नई दिशा में अग्रसर हो रहे हैं। भारत और अमेरिका के मध्य सैन्य गठबंधन के माध्यम से दोनों देश सुरक्षा क्षेत्र में सहयोग कर अपनी भूमिका का निर्वहन करेंगे ।

भारत अमेरिका संबंध चुनौतियॅा :

अमेरिका ने अपने विदेश नीति में नवीन उपनिवेशवाद को जन्म दिया है, जहां भारत ने अमेरिका क नीति का विरोध किया है ।

नए अमेरिकी कानून तथा रूस व ईरान पर अमेरिकी प्रतिबंध से भारत अमेरिका के संबंध में बड़े चुनौतियां पेश कर रहे हैं ।

पाकिस्तान की पर्याप्त अमेरिकी सैन्य व आर्थिक सहायता से भारत अमेरिकी संबंधों में गिरावट आई है । रूस के साथ भारत के संबंध भी दोनों देशों के मध्य मतभेद हैं ।

पेशेवर वीजा में कटौती तथा वीजा को रद्द करने के प्रयास से दोनों देशों के संबंधों में तनाव बढ़ रहा है।

अमेरिका की भारत के पड़ोसियों के साथ बांग्लादेश पाकिस्तान मालदीव् नीतियां कभी–कभी भारत के क्षेत्रीय हितों से मेल नहीं खाती ।

शोध प्रविधि :

इस पेपर का अध्यनरत हेतु विभिन्न शोध प्रविधि का उपयोग आवश्यकतानुसार उपयोग किया गया है । जिसमें ऐतिहासिक शोध प्रविधि वर्णनात्मक शोध प्रविधि विश्लेषणात्मक शोध प्रविधि । इस पेपर मे संकलन का भी उपयोग किया गया है ,जिसका आधार स्रोत द्वितीय संकलन से लिया गया है। जिसमें पुस्तक रिपोर्ट व अखबार शोध पेपर की सहायता से विवरण प्रस्तुत किया गया है। इस पेपर का अध्यनरत हेतु विभिन्न शोध प्रविधि का उपयोग आवश्यकता अनुसार किया गया है ,जिसमें ऐतिहासिक शोध प्रविधि विश्लेषणात्मक शोध प्रविधि व्याख्यात्मक शोध प्रविधि का उपयोग किया गया है।

निष्कर्ष :

उपयुक्त विवरण से यह स्पष्ट होता है कि भारत अमेरिका संबंध पूरा राजनीति को परिभाषित करने वाली सबसे महत्वपूर्ण साझेदारी में से एक है । यह साझेदारी आने वाले समय में केवल एशिया की सुरक्षा तय नहीं करेगी बल्कि जलवायु परिवर्तन वैश्विक स्वास्थ्य सुरक्षा और भारती प्रौद्योगिकी आतंकवाद के नियमन जैसे वैश्विक मुद्दों का भविष्य भी तय करेगी ।भारत और अमेरिका का आना केवल दो देशों का मिलन नह बल्कि वैश्विक लोकतांत्रिक मूल्य और बहूपक्षीय स्थिरता का शुद्ध कारण है । हालांकि दोनों देशों के मध्य कुछ मतभेद हमेशा रहेंगे क्योंकि भारत अपनी संप्रभुता और रण्नीतिक साझेदारी से समझौता नहीं कर सकता ।

संदर्भ सूची :

1 नेशनल इंटेलिजेंस काउंसिल (2021):''वैश्विक रूझान 2040 एक अधिक संघर्षपूर्ण दुनिया''।

2 सीकरी.राजीव(2017): ''भारत की विदेश नीति चुनौती और रणनीतिया'', नई दिल्ली ,सेज पब्लिकेशन।

3 खन्ना. वी एन ,अरोड़ा लिपाक्षी(2008):''भारत की विदेश नीति'' ,नई दिल्ली, विकास पब्लिशिंग हाउस ।

4 दीक्षित. जै एन,(2001):''भारत की विदेश नीति और उसके पड़ोसी''नई दिल्ली, ज्ञान पब्लिशिंग हाउस ।

5 बिस्वाल. तपन(2010):''अंतरराष्ट्रीय संबंध'' नई दिल्ली, मेक मिलन पब्लिशर द्वारा प्रकाशित ।

6 मिनिस्ट्री ऑफ एक्सटर्नल अफेयर्स वी(2019):'' इडिया यूएस रिलेशन ।

7 मोहन सी राजा (2003):''क्रोंसिग द रुबिकॉनः सेपिग ऑफ इडिंया फॉरेन पोलिसी ।

8 पंत एच वी(2019):''द यू एस इडिया स्टेटजिक पाटनरसिप पावर प्रिंसिपल एंड पॉलिटिक्स ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस ।

9 विस्बाल तपन अंतरराष्ट्रीय संबंध द ओरियंट ब्लैक स्वान दिल्ली 2016 ।

10 पंत पुष्पेश जितेंद्र कुमार पांडे मेगा हिल्स नोएडा 2023 ।

11 घई यू आर के के धई के अंतरराष्ट्रीय राजनीति न्यू एकेडमिक पब्लिशिंग कंपनी जालंधर ।